''मीठे बच्चे – तुम सबको जीवनमुक्ति का मन्त्र देने वाले सतगुरू के बच्चे गुरू हो, तुम ईश्वर के बारे में कभी भी झूठ नहीं बोल सकते''

प्रश्नः- सेकेण्ड में जीवनमुक्ति प्राप्त करने की विधि और उसका गायन क्या है?

उत्तरः- सेकेण्ड में जीवनमुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रवृत्ति में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो। सिर्फ इस अन्तिम जन्म में पवित्रता की प्रतिज्ञा करो तो जीवनमुक्ति मिल जायेगी। इस पर ही राजा जनक का मिसाल गाया हुआ है कि गृहस्थ व्यवहार में रहते एक सेकेण्ड में प्रतिज्ञा के आधार पर जीवनमुक्ति प्राप्त की।

गीतः- यह वक्त जा रहा है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बाप जो सुनाते हैं वह एक कान से सुन दूसरे से निकालना नहीं है। ज्ञान के नशे में रह अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना है।

2) सभी को सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए यही महामन्त्र सुनाना है कि ''देह सहित देह के सब सम्बन्धों को त्याग बाप को याद करो।''

वरदानः- क्लीयर बुद्धि द्वारा हर बात को परखकर यथार्थ निर्णय करने वाले सफलता मूर्त भव

जितनी बुद्धि क्लीयर है उतनी परखने की शक्ति प्राप्त होती है। ज्यादा बातें सोचने के बजाए एक बाप की याद में रहो, बाप से क्लीयर रहो तो हर बात को सहज ही परखकर यथार्थ निर्णय कर सकेंगे। जिस समय जैसी परिस्थिति, जैसा सम्पर्क सम्बन्ध वाले का मूड, उसी समय पर उस प्रमाण चलना, उसको परखकर निर्णय लेना, यह भी बहुत बड़ी शक्ति है जो सफलतामूर्त बना देती है।

स्लोगनः- ज्ञान सूर्य बाप के साथ लकी सितारे वह हैं जो जग से अंधकार को मिटाने वाले हैं, अंधकार में आने वाले नहीं।

''मीठे बच्चे – ज्ञान और योग के साथ-साथ तुम्हारी चलन भी बहुत अच्छी चाहिए, कोई भी भूत अन्दर न हो क्योंकि तुम हो भूतों को निकालने वाले''

प्रश्नः- सपूत बच्चों को कौन-सा नशा स्थाई रह सकता है?

उत्तरः- बाबा से हम डबल सिरताज, विश्व के मालिक बनने का वर्सा ले रहे हैं। यह नशा सपूत बच्चों को ही स्थाई रह सकता है। परन्तु काम-क्रोध का भूत अन्दर होगा तो यह नशा नहीं रह सकता। ऐसे बच्चे फिर बाप का रिगार्ड भी नहीं रख सकते, इसलिए पहले भूतों को भगाना है। अपनी अवस्था मजबूत बनानी है।

गीतः- कौन आया मेरे मन के द्वारा...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अन्दर-बाहर साफ रहना है। सच्ची दिल से बाप को अपना समाचार देना है, कुछ भी छिपाना नहीं है।
2) अब वापस जाना है, इसलिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है, चुप रहना है।

वरदानः- मेरे को तेरे में परिवर्तन कर उड़ती कला का अनुभव करने वाले डबल लाइट भव

यह विनाशी तन और धन, पुराना मन मेरा नहीं, बाप को दे दिया। पहला संकल्प ही यह किया कि सब कुछ तेरा... इसमें बाप का फ़ायदा नहीं, आपका फ़ायदा है क्योंकि मेरा कहने से फँसते हो और तेरा कहने से न्यारे हो जाते हो। मेरा कहने से बोझ वाले बन जाते और तेरा कहने से डबल लाइट, ट्रस्टी बन जाते। जब तक कोई हल्का नहीं बनते तब तक ऊँची स्थिति तक पहुँच नहीं सकते। हल्का रहने वाले ही उड़ती कला द्वारा आनंद की अनुभूति करते हैं। हल्का रहने में ही मजा है।

स्लोगनः- शक्तिशाली आत्मा वह है जिस पर कोई भी व्यक्ति वा प्रकृति अपना प्रभाव न डाल सके।

''मीठे बच्चे – तुम्हारा रूहानी योग है एवर प्योर बनने के लिए क्योंकि तुम पवित्रता के सागर से योग लगाते हो, पवित्र दुनिया स्थापन करते हो''

प्रश्नः- निश्चयबुद्धि बच्चों को पहले-पहले कौन-सा निश्चय पक्का होना चाहिए? उस निश्चय की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- हम एक बाप के बच्चे हैं, बाप से हमको दैवी स्वराज्य मिलता है, यह पहले-पहले पक्का निश्चय चाहिए। निश्चय हुआ तो फौरन बुद्धि में आयेगा कि हमने जो भक्ति की है वह अब पूरी हुई, अब स्वयं भगवान् हमें मिला है। निश्चयबुद्धि बच्चे ही वारिस बनते हैं।

गीतः- ओ दूर के मुसाफिर...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) कोई भी बहाना न कर बाप की श्रीमत पर चलते रहना है। सर्विस का सबूत देना है।

2) हम ईश्वरीय सन्तान हैं, हमारा ऊँच ते ऊँच घराना है, यह भूलना नहीं है। निश्चयबुद्धि बनना और बनाना है।

वरदानः- श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर रह सर्व को सम्मान देनेवाले सर्व के माननीय भव

सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहकर, निर्मान बन सबको सम्मान देते चलो तो यह देना ही लेना बन जायेगा। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्हास में लाकर आगे करना। सदा स्वमान में रहने से सर्व प्राप्तियाँ स्वत: हो जायेंगी। स्वमान के कारण विश्व सम्मान देगी और सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान मिलने के पात्र, माननीय बन जायेंगे।

स्लोगनः- जो सर्व को रिगार्ड देता है उसका रिकार्ड स्वत: ठीक हो जाता है।

''मीठे बच्चे – अपना सौभाग्य बनाना है तो ईश्वरीय सेवा में लग जाओ, माताओं-कन्याओं को बाप पर कुर्बान जाने की उछल आनी चाहिए, शिव शक्तियाँ बाप का नाम बाला कर सकती हैं''

प्रश्नः- सभी कन्याओं को बाप कौन-सी शुभ राय देते हैं?

उत्तरः- हे कन्यायें – तुम अब कमाल करके दिखाओ। तुम्हें मम्मा के समान बनना है। अब तुम लोक-लाज छोड़ो। नष्टोमोहा बनो। अगर अधर कन्या बनी तो दाग़ लग जायेगा। तुम्हें रंग-बिरंगी माया से बचकर रहना है। तुम ईश्वरीय सेवा करो तो हज़ारों आकर तुम्हारे चरणों पर पड़ेंगे।

गीतः- माता ओ माता तू है सबकी भाग्य विधाता...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) इस दुनिया में अपना बाहरी शो नहीं करना है। सम्पूर्ण पास होने के लिए गुप्त पुरूषार्थ करते रहना है।
2) इस रंग-बिरंगी दुनिया में फँसना नहीं है। नष्टोमोहा बन बाप का नाम बाला करने की सेवा करनी है। सबका सौभाग्य जगाना है।

वरदानः- दिलाराम बाप की याद द्वारा तीनों कालों को अच्छा बनाने वाले इच्छा मुक्त भव

जिन बच्चों की दिल में एक दिलाराम बाप की याद है वह सदा वाह-वाह के गीत गाते रहते हैं, उनके मन से स्वप्न में भी ''हाय'' शब्द नहीं निकल सकता क्योंकि जो हुआ वह भी वाह, जो हो रहा है वह भी वाह और जो होना है वह भी वाह। तीनों ही काल वाह-वाह है अर्थात् अच्छे ते अच्छा है। जहाँ सब अच्छा है वहाँ कोई इच्छा उत्पन्न नहीं हो सकती क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्तियाँ हैं। प्राप्ति सम्पन्न बनना ही इच्छा मुक्त बनना है।

स्लोगनः- संस्कारों को ऐसा शीतल बना लो जो जोश वा रोब के संस्कार इमर्ज ही न हों।

''मीठे बच्चे – यह बना-बनाया अनादि ड्रामा है, इस ड्रामा में हर एक एक्टर की एक्ट फिक्स है, मोक्ष किसको भी नहीं मिल सकता''

प्रश्नः- शिवबाबा अशरीरी है, वह शरीर में किसलिए आते हैं? कौन-सा काम करते हैं और कौन-सा नहीं?

उत्तरः- बाबा कहते – बच्चे, मैं इस शरीर में तुम्हें सिर्फ मुरली सुनाने आता हूँ। मैं मुरली सुनाने का ही काम करता हूँ। मैं खाने पीने के लिए नहीं आता हूँ। मैं आया हूँ तुम्हें नई राजधानी देने। बाकी स्वाद तो इनकी आत्मा लेती है।

गीतः- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) ज्ञान की अच्छी धारणा के लिए पवित्रता के व्रत को अपनाना है। अन्तकाल है, इसलिए ऐसा अभ्यास करना है जो एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये।

2) दधीचि ऋषि मिसल सेवा करते विकारों पर विजय प्राप्त कर जगतजीत बनना है।

वरदानः- समय की रफ्तार प्रमाण सर्व प्राप्तियों से भरपूर रह मायाजीत बनने वाले तीव्र पुरुषार्थी भव

बापदादा ने जो भी प्राप्तियाँ कराई हैं, उन सर्व प्राप्तियों को स्वयं में जमा कर भरपूर रहो, कोई भी कमी न रहे। जहाँ भरपूरता में कमी है वहाँ माया हिलाती है। मायाजीत बनने का सहज साधन है – सदा प्राप्तियों से भरपूर रहना। कोई एक भी प्राप्ति से वंचित नहीं रहो, सर्व प्राप्ति हों। समय की रफ्तार प्रमाण कोई भी समय कुछ भी हो सकता है, इसलिए तीव्र पुरुषार्थी बन अभी से भरपूर बनो। अब नहीं तो कभी नहीं।

स्लोगनः- सत्यता और निर्भयता की शक्ति साथ हो तो कोई भी कारण हिला नहीं सकता।

''मीठे बच्चे – अविनाशी सर्जन से कुछ भी छिपाना नहीं है, अवज्ञा हो तो क्षमा लेनी है, नहीं तो बोझ चढ़ता जायेगा, निंदक बन पड़ेंगे''

प्रश्नः- सच्ची कमाई का आधार क्या है? उन्नति में विघ्न क्यों पड़ते हैं?

उत्तरः- सच्ची कमाई का आधार पढ़ाई है। अगर पढ़ाई ठीक नहीं तो सच्ची कमाई कर नहीं सकते। उन्नति में विघ्न तब ही पड़ता जब संग ठीक नहीं। कहा भी जाता है संग तारे कुसंग बोरे। संग खराब होगा तो पढ़ेंगे नहीं, नापास हो जायेंगे। संग ही एक-दो को रसातल में पहुँचा देता है, इसलिए संगदोष से तुम बच्चों को बहुत ही सम्भाल करनी है।

गीतः- तू प्यार का सागर है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) संग दोष से सदा बचे रहना है। सच्ची पढ़ाई पढ़कर सच्ची कमाई का स्टॉक जमा करना है।

2) कदम-कदम पर बाबा की श्रीमत पर चलेंगे – यह अपने साथ प्रण करना है।

वरदानः- सर्व फरियादों के फाइल को समाप्त कर फाइन बनने वाले कर्मयोगी भव

जैसे आत्मा और शरीर कम्बाइन्ड है तो जीवन है, ऐसे कर्म और योग कम्बाइन्ड हो। 2-3 घण्टा योग लगाने वाले योगी नहीं, लेकिन योगी जीवन वाले। उनका योग स्वत: और सहज होता है, उनका योग टूटता ही नहीं जो मेहनत करनी पड़े। उन्हें कोई भी फरियाद करने की आवश्यकता नहीं। याद में रहने से सब कार्य स्वत: सफल हो जाते हैं। फाइन बनने वाले के सब फाइल खत्म हो जाते हैं, क्योंकि योगी जीवन सर्व प्राप्तियों की जीवन है।

स्लोगनः- हर समय करावनहार बाप याद रहे तो निरन्तर योगी बन जायेंगे।

''शिव जयन्ती की गिफ्ट – मेहनत को छोड़ मुहब्बत के झूले में झूलो''

- आज स्वयं शिव पिता अपने चारों ओर के आये हुए बच्चों से अपनी जयन्ति मनाने आये हैं। बाप को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। बच्चे बर्थ डे की गिफ्ट तो जरूर देते ही हैं तो क्यों नहीं आज के दिन सभी बच्चे यह गिफ्ट के रूप में दें।
- अगर कोई भी बच्चे थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हैं, अचल से हलचल में आते हैं तो उसका कारण सिर्फ 3 बातें मुख्य हैं, वही तीन बातें भिन्न-भिन्न समस्या या परिस्थिति बनकर आती हैं। अशुभ वा व्यर्थ सोचना, अशुभ वा व्यर्थ बोलना और अशुभ वा व्यर्थ करना। सोचना, बोलना और करना – इसमें टाइम वेस्ट बहुत होता है।
- बापदादा आज यह तीन बातें सोचना, बोलना और करना – इनकी गिफ्ट सभी से लेने चाहते हैं।
- अभी अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, खुशी के झूले में झूलो। शक्तियों की अनुभूतियों के झूले में झूलो। झूले से उतरो नहीं। संकल्प में भी देह-भान नहीं आवे।

वरदान:- ब्राह्मण जीवन में सदा मेहनत से मुक्त रहने वाले सर्व प्राप्ति सम्पन्न भव

इस ब्राह्मण जीवन में दाता, विधाता और वरदाता – तीनों संबंध से इतने सम्पन्न बन जाते हो जो बिना मेहनत रूहानी मौज में रह सकते हो। बाप को दाता के रूप में याद करो तो रूहानी अधिकारीपन का नशा रहेगा। शिक्षक के रूप में याद करो तो गॉडली स्टूडेन्ट हूँ, इस भाग्य का नशा रहेगा और सतगुरू हर कदम में वरदानों से चला रहा है। हर कर्म में श्रेष्ठ मत – वरदाता का वरदान है। ऐसे सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहो तो मेहनत से मुक्त हो जायेंगे।

स्लोगन:- बुद्धि का हल्कापन व महीनता ही सबसे सुन्दर पर्सनालिटी है।